फिल्म के बहाने संस्कृति पर हमला

हिन्दू संस्कृति हमेशा ही विदेशी हमले की ज़द में रही है। जो भी विदेशी आक्रान्ता जानेअनजाने भारत में आया उसका मुख्य निशाना बने भारतीय - सांस्कृतिक धरोहर एवं संस्कृति के प्रतीक। आजाद भारत में यह सिलसिला न केवल अनवरत जारी है अपितु ये हमले और भी भयावह हुए हैं। आज हर कोई जानता है कि भारत को सैन्य शक्ति के बल पर पराजित नहीं किया जा सकता है, इसलिए हमलों के तरीके एवं तरकीबें बदली हैं। आज ये हमले हिन्दुस्तान एवं हिन्दू संस्कृति पर चतुर्दिक प्रारम्भ हुए हैं। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर जो खेल आजादी के बाद से प्रारम्भ हुआ, आज यह देश उसके दुष्परिणाम हर क्षेत्र में भुगत रहा है। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम में भारत के आराध्य देवों एवं महापुरुषों के सम्बन्ध में अनर्गल प्रलाप होना, हिन्दू देवीदेवताओं के अश्लील चित्र - बनाना, दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग की पाठ्य पुस्तक में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और माँ जानकी आदि के बारे में अनर्गल टिप्पणियाँ देखनेसुनने - के बाद अबफिल्मों के माध्यम से संस्कृति पर हमला करने का प्रयास हुआ है। 'जोधा अकबर' फिल्म उसी कड़ी का एक हिस्सा है। आखिर फिल्म निर्माता को जोधा अकबर पर ही फिल्म बनाने की क्यों सूझी? फिल्में सामाजिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम एवं समाज में संवाद स्थापित करने का मजबूत आधार भी होती हैं। आखिर जोधा अकबर पर ही क्यों, फिल्म निर्माता को महारानी लक्ष्मीबाई, वीरांगना दुर्गावती, महारानी पद्मिनी, महारानी मीराबाई आदि पर फिल्म बनाने की क्यों नहीं सूझी? यह हिन्दू समाज एवं संस्कृति के साथ खिलवाड़ है। ऐसा खिलवाड़ जिसे केवल और केवल शरारत कहा जा सकता है। भारत की यह प्रवृत्ति कभी नहीं रही है कि वह मातृशक्ति का अपमान बर्दाश्त करे। जहाँ एक ओर जीवनरथ - के दो पहियों के रूप में उनका महत्त्व सर्वथा समान है वहीं नर की खान के रूप में माता, भगिनी, पत्नी और पुत्री जैसी मातृशक्ति की विभिन्न अभिव्यक्तियों के

रूप में मातृत्व और धात्रीत्व के कारण 'स्वर्गादपि गरीयसी' होकर सर्वोच्चता के पद पर भी वह प्रतिष्ठित है। "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है वहीं देवता निवास करते हैं, जैसे धर्मशास्त्रों के वचन का तात्पर्य और मर्म मातृशक्ति की महिमा से ही है। समय चाहे वैदिक काल का रहा हो अथवा रामायण काल का, महाभारत काल का रहा हो अथवा उसके उपरान्त का, हर युग और काल में सैकड़ों ऐसे दृष्टान्त मिलते हैं जो मातृशक्ति के सम्मान के ठोस प्रमाण प्रस्तुत करते हैं । साथ ही जब भी किसी रावण ने मातृशक्ति स्वरूपा सीता का अपहरण किया तो न केवल रावण अपितु जिस रावण के बारे में कहा जाता है कि "एक लख पूत, सवा लख नाती, ता रावण घर दिया न बाती" जैसी पूरी राक्षस जाति का अन्त श्रीराम के हाथों हो गया। जब भी किसी कंस ने माता देवकी का अपमान किया तो कृष्ण को अवतार लेना पड़ा। यही नहीं द्वापर में भी द्रौपदी के अपमान का बदला महाभारत के रूप में देखने को मिला। महाभारत में हमने उस समय के महारथी गंगा पुत्र भीष्म तथा गुरु द्रोणाचार्य की दुर्गति को भी देखा है। जो भी व्यक्ति वह चाहे कितना ही त्यागी, तपस्वी, बुद्धिमान अथवा बलवान क्यों न हो अगर मातृशक्ति का अपमान करता है अथवा करते हुए देखता है तो अन्त में उसे जीवन रूपी महाभारत में धराशायी तो होना ही पड़ेगा। भीष्म पितामह एवं द्रोणाचार्य इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। अगर इस दृष्टान्त को भारत की परवर्ती पीढ़ियों ने आत्मसात् करने का प्रयास किया होता तो यह देश कभी गुलाम नहीं होता। देश की गुलामी का मुख्य कारण व्यक्तिगत स्वार्थ एवं नकारात्मक प्रतिस्पर्धा रही है। अपने स्वार्थ के लिए अगर किसी कालखण्ड में किसी राजा ने अपनी रियासत को बचाने के लिए अपनी पुत्री किसी मुगल बादशाह को दे दी हो तो इसका मतलब यह तो नहीं कि यह आचरण सभी का हो। उस काल खण्ड में मेवाड़ के महाराणा प्रताप भी थे जिन्होंने प्रण लिया था कि आजीवन किसी भी विदेशी आक्रान्ता के सामने झुकेंगे नहीं, आखिर इस संकल्प की याद फिल्म निर्माता को क्यों नहीं आई? पद्मिनी जैसी महारानी के जौहर की ओर क्यों

नहीं ध्यान गया? महारानी मीराबाई की भक्ति तथा महारानी लक्ष्मीबाई का शौर्य फिल्म निर्माता को क्यों याद नहीं आया? इसलिए मैं इसे एक शरारत मानता हूँ। इस शरारत को जैसे भी हो, हमें बन्द करवाना ही होगा अन्यथा अगर मातृशक्ति का अपमान इसी प्रकार चलता रहा तो एक और महाभारत में व्यापक संहार के लिए हमें तैयार होना ही होगा।